विद्यापति के काव्य में श्रृंगार, भक्ति और समाज-दर्शन

‘पदावली’ और ‘कीर्तिलता’ के विशेष संदर्भ में

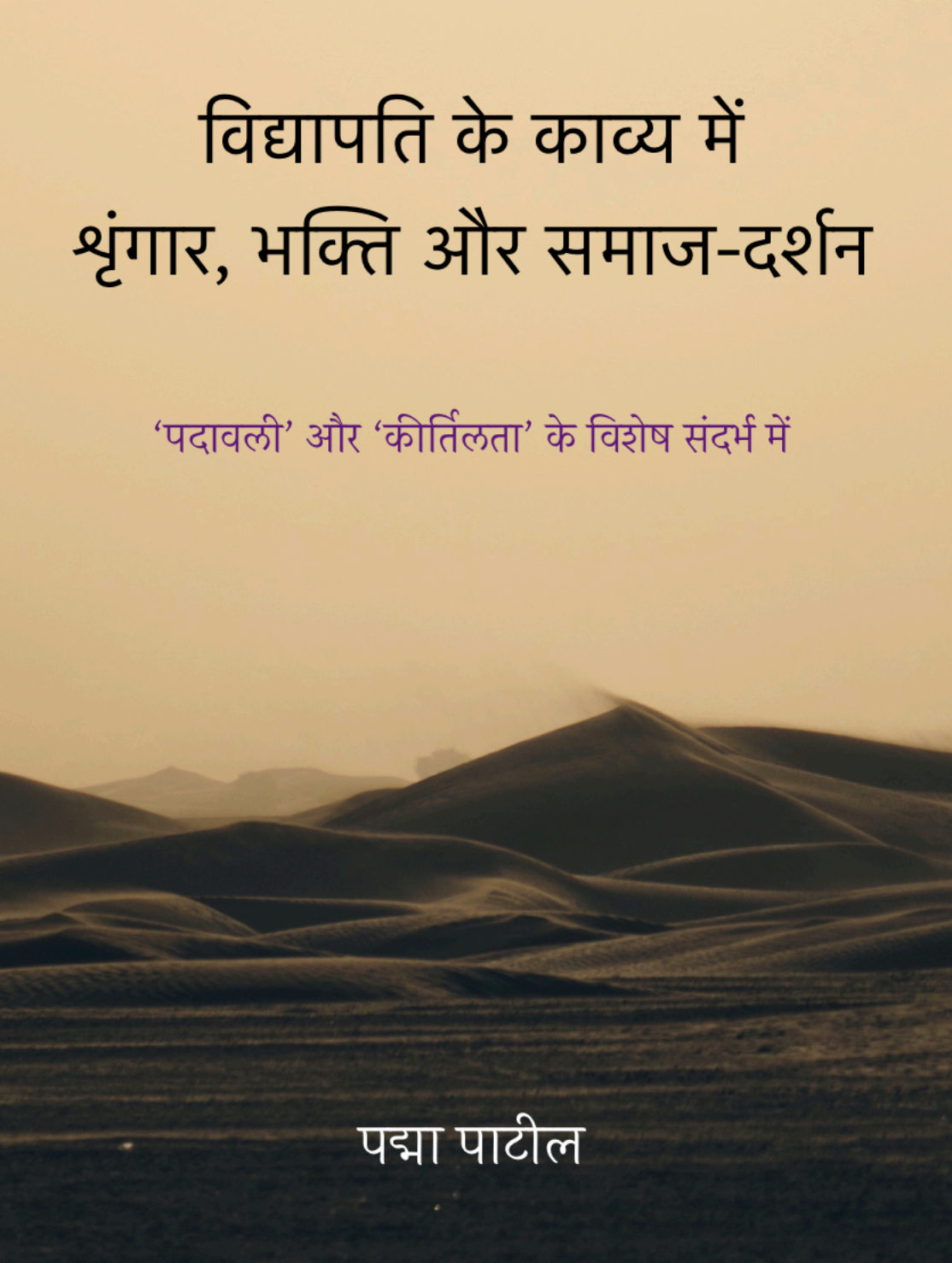

पद्मा पाटील

विद्यापति के काव्य में शृंगार, भक्ति और समाज-दर्शन

('पदावली' और 'कीर्तिलता' के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ.पद्मा पाटील

अधिव्याख्याती, हिन्दी विभाग,

डॉ.बा.आ.मराठवाडा विश्वविद्यालय,

औरंगाबाद -431 004

गंधबहार प्रकाशन , कोल्हापुर

विद्यापति के काव्य में शृंगार, भक्ति और समाज-दर्शन

('पदावली' और 'कीर्तिलता' के विशेष संदर्भ में)

डॉ. पद्मा पाटील

3,अश्विनीनगर ,सागरमाल,कोल्हापुर- 416008.

गंधबहार प्रकाशन

868/6-9,कलंबा,रिंग रोड,कोल्हापुर -416012.

प्रथम संस्करण : 1999.

© लेखिकाधीन

मूल्य: 150.00

आवरण तथा आन्तरिक संयोजन : डॉ.पद्मा पाटील

त्रिमिती लेसर ग्राफिक्स,

नवरंग ऑफसेट, कोल्हापुर- 416 012

"This book is published with the financial assistance received from the Dr. Babasabeb Ambedkar Marathawada University, Aurangabad.

भूमिका

मिथिला उत्तरभारत का प्रसिद्ध जनपद है। इसके उल्लेख रामायण,महाभारत काव्य में भी मिलते हैं। मिथिला की प्राचीन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ,सभ्यता,संस्कृति तथा धार्मिक गरिमा से उसकी कीर्ति सारे विश्व में फैली हुई है। मिथिला के राजा,महारानियाँ , दरबारी कवि एवम् मिथिला की प्रजा बहुत ही विद्वान रही है। प्राचीन प्रमाणों से यह स्पष्ट हुआ है कि मिथिला बहुत काल तक वेदों,शास्त्रों आदि का विद्या केन्द्र रही है। गौतम, जैमिनी, कपिल ने क्रमश: न्याय, मीमांसा तथा सांख्यविषयक व्याख्यान सर्वप्रथम मिथिला में ही दिये थे। ऐतिहासिक तथा राजनीतिक उथल-पुथल के पश्चात् भी मिथिला ने परम्परित विद्यार्जन कार्य सुरक्षित रखा।

ऐसी बहुत समृद्ध 'मिथिला' न जाने क्यों मुझे बहुत सालों से अपनी ओर खींचती रही है। इसी संस्कृति सम्पन्न मिथिला के विद्यापति,दरबारी एवम् जनप्रिय कवि थे। उनका जन्म मिथिला के सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ था। दरबारी विलास-वैभव और घर के धार्मिक वातावरण से उनका हृदय रसिकता तथा भक्तिभाव से परिपूर्ण था। उनका संस्कृत, अवहट्ठ और मैथिली तीनों भाषाओं पर असाधारण अधिकार था। उन्होंने इन तीनों भाषाओं में रचनाएँ की। इन रचनाओं से उनकी बहुमुखी तथा बहुआयामी प्रतिभा का परिचय मिलता है। उनकी 'पदावली' उनके सम्पूर्ण साहित्य की अक्षय्य निधि है। उनके काव्यकौशल का प्रभाव प्रतिस्पर्धियों , दरबारी रसिकजनों एवम् जनमानस पर भी छाया हुआ था।

मिथिला के कवि विद्यापति की बहुमुखी प्रतिभा तथा व्यक्तित्व ने मुझे प्रभावित किया। उनके लिखे हुए 'राधा-कृष्ण' के पदों पर विद्वान वर्ग में नित्य होती रही चर्चाओं -समीक्षाओं पर मेरी नजर हमेशा जाती रही। उनकी 'पदावली' शृंगार रससिक्त काव्यग्रंथ है। संस्कृति-सम्पन्न मिथिला, मिथिलावासी विद्वान कवि विद्यापति,जनभाषा मैथिली में लिखित 'पदावली' तथा उसके आधार पर विद्यापति के शृंगारी-भक्त व्यक्तित्व पर हुई चर्चाओं ने मुझे सोचने के लिए बाध्य किया। इसके साथ ही इतिहास के प्रति विशेष रुचि होने के कारण 'कीर्तिलता' के कथानक ने मेरे मन में घर कर लिया। 'कीर्तिलता' ऐतिहासिक वीरकाव्य है जो तत्कालीन समाज का व्यथार्थ दर्शन प्रस्तुत करता है । 'कीर्तिलता' में कीर्तिसिंह राजा का वीरगान किया गया है। मिथिला का उद्धार कर जब कीर्तिसिंह मिथिला की गद्दी पर बैठे और शासन करने लगे तो उनके गुणों से प्रभावित होकर विद्यापति ने इस काव्य का सृजन

किया। इस काव्य में तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण करने में विद्यापति को पूर्ण सफलता मिली है। 'कीर्तिलता ' के समाज-दर्शन पर दृष्टिपात करने का मेरा उद्देश्य यही रहा है कि हम तत्कालीन सामाजिक जीवन के हर पहलू से परिचित हो जाय। विद्यापति की सूक्ष्म दृष्टि ने तत्कालीन समाज के किसी भी अंग को अनदेखा नहीं किया है।

'पदावली' जनभाषा मैथिली में तथा 'कीर्तिलता' देसी भाषा 'अवहट्ठ' में लिखी रचनाएँ हैं। अत: मैंने विद्यापति की इन दो रचनाओं का अनुसन्धान के लिए चयन किया। विद्यापति जनभाषा के पहले कवि हैं जिन्होंने शृंगार और भक्ति को समन्वित कर एक रूप दिया है। साहित्य की इन दो प्रवृत्तियों के आधार पर विद्यापति के शृंगारी और भक्तगत्वर व्यक्तित्व पर अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। परन्तु 'पदावली' के शृंगार और भक्ति का परस्पर सम्बन्ध, शृंगार भावना का उदात्त होकर भक्तिभाव में परिणत हो जाना आदि विषय पर अध्ययन नहीं हुआ है। 'पदावली' सम्बन्धी बार-बार मन में प्रश्न उठ खड़े हुए थे। विद्यापति ने राधा-कृष्ण को ही नायिका-नायक क्यूँ चुना ? उनसे सम्बन्धित शृंगार तथा भक्ति भावना को एक-साथ क्यूँ प्रस्तुत किया ? उनके सामने इन दो प्रवृत्तियों को लेकर चलनेवाली परम्परा के कौन से ग्रंथ या ग्रंथकार थे ? उन रचनाकारों ने भी इन भावनाओं की प्रस्तुति आवश्यक क्यूँ समझी? समाज के लिए इनसे सम्बन्धित कौन सी प्रवृत्तियाँ आवश्यक तथा उपयोगी थी ? 'कीर्तिलता' के आधार पर भी अनेक प्रश्न मन में उभर आये। 'कीर्तिलता' कालीन समाज कितने वर्णों में विभाजित था। तत्कालीन समाज की आर्थिक व्यवस्था कैसी थी और समाज के धार्मिक विचार कैसे थे ? आर्थिक आय के साधन कौन से थे ? कौन से देवी-देवताओं का प्रचलन था ? वर्णव्यवस्था का विभाजन स्वस्थ समाज की परिपूर्ति करता था या नहीं ? ऐसे अनेक प्रश्नों को सुलझाने के लिए 'पदावली' तथा 'कीर्तिलता' के आधार पर अनुसन्धान प्रारम्भ किया । मैथिली भाषा में लिखी हुई 'पदावली' शृंगार और भक्ति के समन्वित रूप के कारण अनन्य साधारण रचना ठहरती है। विद्यापति की अवहट्ठ में लिखी दो रचनाएँ तो हैं परन्तु 'कीर्तिलता' उपलब्ध हैं जो ऐतिहासिक-वीररसात्मक तथा समाज दर्शन प्रस्तुत करनेवाली कृति है। 'कीर्तिपताका' प्रकाशित नहीं हो सकी है। इस अनुसन्धान में 'पदावली' से सम्बन्धित विचारों को विस्तृतता दी है और 'कीर्तिलता ' के आधार पर केवल समाज-दर्शन पर दृष्टिपात किया है। शृंगार तथा भक्ति का शास्त्रीय विवेचन देकर 'पदावली' का शृंगार, भक्ति तथा शृंगार की भक्ति में परिणति सम्बन्धी विचारों को प्रमुखता दी है।

प्रस्तुत पुस्तक नौ अध्यायों में विभाजित हैं। प्रथम अध्याय में विद्यापति का जीवन परिचय , आश्रयदाताएँ, रचनाएँ, उनके काव्य प्रेरणा-स्रोत, उनके समकालीन विभिन्न परिवेश की प्रस्तुति की है। सबसे प्रमुख महत्त्व तत्कालीन सांस्कृतिक परिवेश का रहा है

जो विद्यापति का एक प्रमुख प्रेरणा-स्रोत माना जाता है। द्वितीय अध्याय शृंगार के शास्त्रीय विवेचन से सम्बन्धित है। इसमें 'शृंगार ' की परिभाषा,स्वरूप,भेद आदि का संक्षिप्त परिचय दिया है। तृतीय अध्याय में 'पदावली' में अभिव्यक्त शृंगार की चर्चा की है। शृंगार के शास्त्रीय स्वरूप के आधार पर 'पदावली' के संयोग तथा विप्रलम्भ शृंगार का विवेचन,नायिका भेद,कृष्णवर्णन, राधा-वर्णन आदि का विस्तृत विवेचन किया है। चतुर्थ अध्याय में 'पदावली' पर हुए पूर्ववर्ती ग्रंथों के प्रभाव से सम्बन्धित मत तथा स्पष्टीकरण दिये हैं। इसके अन्तर्गत 'गीतगोविन्द ' का प्रभाव प्रथम देखा है। 'गीतगोविन्द' प्रमुख रूप से शृंगार तथा भक्ति के समन्वित रूप की प्रतिष्ठा के लिए प्रसिध्द है। इसके पश्चात् कतिपय काव्यशास्त्रीय तथा शृंगारी ग्रंथों का प्रभाव 'पदावली' पर क्या रहा है , इसका भी विस्तृत स्पष्टीकरण दिया है। 'काव्यप्रकाश', 'साहित्यदर्पण', औचित्यविचारचर्चा ','नाट्यशास्त्र' आदि काव्यशास्त्रीय ग्रंथों तथा 'अमरूशतकम्', 'शृंगारतिलकम्', हालसप्तशती', मेघदूत, कुमारसम्भवम्', शाकुन्तलम् आदि शृंगारी ग्रंथों के प्रभाव का विवेचन किया है। पंचम अध्याय में 'पदावली' में शृंगार की दृष्टि से प्रयुक्त काव्यगुणों का चित्रण प्रस्तुत किया है। षष्ठम् अध्याय भक्ति के शास्त्रीय विवेचन से सम्बन्धित है। इसमें 'भक्ति'की व्युत्पत्ति,परिभाषा,उद्गम, स्वरूप,भेद, इतिहास, विकास तथा साहित्य में भक्ति आदि का संक्षिप्त परिचय दिया है। सप्तम् अध्याय में 'पदावली' में अभिव्यक्त भक्ति की चर्चा की है। इसमें शृंगार और भक्ति का परस्पर सम्बन्ध,'पदावली' के शृंगार की भक्ति में परिणति ,'पदावली' में उपलब्ध भक्तिपरक पद आदि का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है। अष्टम् अध्याय 'कीर्तिलता' से सम्बन्धित है जिसमें 'कीर्तिलता ' में अभिव्यक्त समाज-दर्शन को अंकित किया है। इसमें तत्कालीन सामाजिक ढाँचा ,परिवेश आदि की चर्चा की है। 'कीर्तिलता' में उच्च-वर्ग , जनसाधारण का चित्रण, आर्थिक स्थितियाँ, धार्मिक विचार आदि का विस्तृत स्पष्टीकरण तथा 'कीर्तिलता' के समाज -वर्णन पर पूर्ववर्ती काव्यों के हुए प्रभाव का विवेचन किया है । गाथा सप्तशती,वर्णरत्नाकर,संदेस-रासक आदि ग्रंथों का प्रभाव 'कीर्तिलता' के समाज-वर्णन पर दिखाई देता है। नवम् अध्याय 'उपसंहार' स्वरूप है।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए मुझे समय-समय पर मेरे गुरूजनों से मार्गदर्शन मिलता रहा है। आदरणीय डॉ.वसंत मोरेजी , डॉ.शंकर गुंजीकरजी आदि ने प्राय: मेरी मदद की है। मैं गुरूजनों के ऋणों से मुक्त होना नहीं चाहती हूँ। परन्तु उनके प्रति कृतज्ञता प्रस्तुत करना मेरा कर्तव्य ही है।

प्रस्तुत अनुसंधान को पुस्तक रूप में प्रकाशित करने की इच्छा बहुत ही प्रबल थी । इसकी पूर्ति डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय ने की है। पुस्तक प्रकाशन के लिए यु.जी.सी. प्रकाशन अनुदान योजना के अन्तर्गत इस विश्वविद्यालय ने प्रकाशन